ऐवरग्रीन®

उत्तर पुस्तिका

ICSE

साहित्य सागर

(अभ्यास पुस्तिका)

(A Collection of ICSE-Short Stories & Poems)

नया संस्करण

ऐवरग्रीन पब्लिकेशन्ज़ (इंडिया) लिमिटेड
4738/23, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
दूरभाष : 011-23264528, 23270431, 23257235
एस डी 200, राज रोड, जालंधर शहर-8 दूरभाष : 0181-5002021
0181-2280636, 2282636

JN 21

संक्षिप्त कहानियाँ

1. बात अठन्नी की

(i) *'अगर तुम्हें कोई ज्यादा दे, तो अवश्य चले जाओ। मैं तनख्वाह नहीं बढ़ाऊँगा।'*

(क) वक्ता कौन है? उसका परिचय दीजिए। उसने उपर्युक्त वाक्य किस संदर्भ में कहा है?

उत्तर : वक्ता बाबू जगत सिंह इंजीनियर हैं। समाज में उनका सम्मान है, परंतु वे ईमानदार नहीं है। जब उनके नौकर रसीला ने उसके परिवार का उतने वेतन में गुजारा न चल सकने के कारण अपना वेतन बढ़ाने की प्रार्थना की, तब उन्होंने उपर्युक्त वाक्य कहा।

(ख) श्रोता कौन है? उसने तनख्वाह बढ़ाने की प्रार्थना क्यों की?

उत्तर : श्रोता बाबू जगत सिंह के यहाँ नौकर था। उसने तनख्वाह बढ़ाने की प्रार्थना इसलिए की क्योंकि उसके परिवार में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, एक लड़की और दो लड़के थे। उन सबका भार उसी के कंधों पर था। वह अपनी सारी तनख्वाह घर भेज देता था, परंतु घरवालों का उससे गुजारा नहीं चल पाता था।

(ग) वेतन न बढ़ने पर भी रसीला बाबू जगतसिंह की नौकरी क्यों नहीं छोड़ना चाहता था?

उत्तर : रसीला बाबू जगत सिंह के यहाँ सालों से काम करता था। यहाँ उस पर कभी किसी ने किसी बात का संदेह नहीं किया था। यदि वह नौकरी छोड़कर किसी और जगह नौकरी करने की सोचता और यहाँ ग्यारह-बारह रुपए वेतन भी मिल जाए, पर फिर भी हो सकता था कि यहाँ के लोग उस पर विश्वास न करें। इसलिए वह नौकरी छोड़ने की बात नहीं सोचता था।

(घ) रसीला को रुपयों की आवश्यकता क्यों थी? उसकी सहायता किसने की? सहायता करने वाले के संबंध में उसने क्या विचार किया?

उत्तर : रसीला का वेतन दस रुपए मासिक था, जिसमें उसके बड़े परिवार का गुजारा नहीं चलता था, इसलिए उसने मालिक से वेतन बढ़ाने की प्रार्थना की, पर मालिक ने उसकी एक न सुनी। तब उसकी सहायता रसीला के मालिक के पड़ोस में रहने वाले जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के चौकीदार रमजान ने की। रमजान द्वारा सहायता करने पर रसीला सोचने लगा कि उसने बाबू साहब की इतनी सेवा की, पर दुख में उन्होंने साथ नहीं दिया। परंतु रमजान गरीब है, लेकिन आदमी नहीं, देवता है।

(ii) *'बाबू साहब की मैंने इतनी सेवा की, पर दुख में उन्होंने साथ नहीं दिया।'*

(क) बाबू साहब कौन थे? उनका परिचय दीजिए।

उत्तर : बाबू साहब इंजीनियर जगत सिंह हैं। वे धनी हैं, कंजूस हैं तथा साथ-ही-साथ रिश्वतखोर भी हैं। वे लोगों के काम करवाने के बदले अच्छी-खासी रिश्वत लेते हैं।

(ख) वक्ता को कितना वेतन मिलता था? उसमें उसका गुजारा क्यों नहीं हो पाता था?

उत्तर : वक्ता रसीला इंजीनियर बाबू जगत सिंह के यहाँ काम करता था। उसका वेतन दस रुपए मासिक था। गाँव में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, एक लड़की और दो लड़के थे। इन सबका भार उसी के कंधों पर था। वह अपनी सारी तनख्वाह घर भेज देता था, परंतु बड़ा परिवार होने के कारण उनका गुजारा नहीं हो पाता था।

(ग) बाबू साहब द्वारा वक्ता का वेतन न बढ़ाए जाने पर भी वह कहीं और नौकरी क्यों नहीं करना चाहता था?

उत्तर : रसीला बाबू जगत सिंह के यहाँ सालों से काम करता था। यहाँ उस पर कभी किसी ने किसी बात का संदेह नहीं किया। यदि वह नौकरी छोड़कर किसी और जगह नौकरी करने की सोचता और वहाँ ग्यारह-

Scanned with OKEN Scanner

बारह रुपये वेतन मिल भी जाए, पर फिर भी हो सकता वहाँ के लोग उस पर विश्वास न करें। इसलिए वह नौकरी छोड़ने की बात नहीं सोचता था।

(घ) वक्ता की परेशानी को किसने, किस प्रकार हल किया? इससे उसके चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर : रमज़ान ने कुछ रुपए रसीला के हाथों में रखकर उसकी समस्या का समाधान किया। इससे पता चलता है कि वह बहुत दयालु स्वभाव का था। रसीला को मुसीबत में पड़ा देखकर वह उसकी आर्थिक सहायता करता है।

(iii) *'बस पाँच सौ! इतनी-सी रकम देकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं'। 'हुज़ूर मान जाइए। आप समझें आपने मेरा काम मुफ़्त किया है।'*

(क) वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं? उनके कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त पहले कथन का वक्ता इंजीनियर बाबू जगत सिंह और श्रोता रिश्वत देने वाला व्यक्ति है। दूसरे कथन का वक्ता रिश्वत देने वाला व्यक्ति और श्रोता इंजीनियर बाबू जगत सिंह हैं। व्यक्ति बाबू जगत सिंह से कोई काम निकलवाने के बदले में पाँच सौ रुपए की रिश्वत देने की बात करता है परंतु बाबू जगत सिंह केवल पाँच सौ रुपए लेने को तैयार नहीं थे। वे कोई बड़ी रकम चाहते थे।

(ख) रसीला उनकी बातचीत को सुनकर क्या समझ गया और क्या सोचने लगा?

उत्तर : बाबू जगत सिंह की बात सुनकर उनका नौकर रसीला समझ गया कि भीतर रिश्वत ली जा रही है। एक व्यक्ति पाँच सौ की रिश्वत देने को तैयार है, पर बाबू जगत सिंह केवल पाँच सौ में सौदा नहीं करना चाहते।

(ग) 'आप मेरा अपमान कर रहे हैं।'—कथन से वक्ता का क्या संकेत था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यह कथन बाबू जगत सिंह का है। बाबू जगत सिंह रिश्वत देने वाले व्यक्ति से कह रहे हैं कि काम करवाने के लिए पाँच सौ की रकम बहुत कम है। इतनी कम रकम लेना तो मेरे लिए अपमान की बात है। केवल पाँच सौ रुपए में आपका काम नहीं करूँगा।

(घ) उपर्युक्त पंक्तियों में समाज में व्याप्त किस बुराई की ओर संकेत किया गया है? इस बुराई का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : इन पंक्तियों में समाज में व्याप्त रिश्वत लेने एवं भ्रष्टाचार जैसी बुराई की ओर संकेत किया गया है। इस बुराई का समाज पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। समाज के उच्च प्रतिष्ठित पदों पर आसीन लोग रिश्वत लेकर ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करते हैं, जबकि मेहनती परंतु निर्धन व्यक्ति ईमानदारी से काम करता है, परंतु फिर भी उनके हाथ कुछ नहीं आता।

(iv) *'बस इतनी-सी बात! हमारे शेख साहब तो उनके भी गुरु हैं।'*

(क) वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं? दोनों का परिचय दीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति के वक्ता रमज़ान है और श्रोता रसीला है। रमज़ान ज़िला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के यहाँ चौकीदार का काम करता था। वह बहुत दयालु स्वभाव का था। रसीला को मुसीबत में घिरा देखकर वह उसकी आर्थिक सहायता करता है। रसीला बाबू जगत सिंह के यहाँ नौकर था। वह अत्यंत मेहनती तथा ईमानदार था।

Scanned with OKEN Scanner

(ख) 'बस इतनी-सी बात'—पंक्ति का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : जब रसीला ने रमज़ान से अपने मालिक बाबू जगत सिंह द्वारा ली जाने वाली रिश्वत की बात बताई तो रमज़ान बोला कि यह तो कुछ भी नहीं है। तुम अपने मालिक को केवल पाँच सौ की रिश्वत लेते देखकर परेशान हो गए हो। मेरे यहाँ तो रोज़ ऐसे ही होता है। इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है।

(ग) 'शेख-साहब तो उनके भी गुरु हैं'—वाक्य में 'शेख साहब' और 'उनके' शब्दों का प्रयोग किस-किस के लिए किया गया है? 'उनके भी गुरु हैं'—पंक्ति द्वारा क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर : इस वाक्य में, शेख साहब ज़िला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन हैं। रमज़ान उनके यहाँ चौकीदार का काम करता था, जो इंजीनियर बाबू जगत सिंह के पड़ोस में रहते थे। 'उनके' शब्द बाबू साहब इंजीनियर जगत सिंह के लिए प्रयोग किया गया है। रमज़ान रसीला से कहता है कि उसके मालिक शेख साहब तो बाबू जगत सिंह से भी कहीं आगे हैं। हमारे यहाँ आज ही एक शिकार फंसा है। वह हज़ार रुपए से कम रिश्वत नहीं लेंगे। इन्हें गुनाह का फल मिलेगा या नहीं, परंतु ऐसी कमाई से ही कोठियों में रहा जाता है।

(घ) वक्ता ने 'शेख साहब' के संदर्भ में श्रोता से अपनी विवशता के संबंध में क्या-क्या कहा?

उत्तर : वक्ता रमज़ान रसीला से कहता है कि शेख साहब जैसे लोग खुलेआम रिश्वतखोरी करते हैं। जब कोई शिकार फँसता है, तो उससे रिश्वत के रूप में अच्छी-खासी रकम वसूल कर लेते हैं। पता नहीं उनके इन कर्मों का फल उन्हें मिलेगा या नहीं, परंतु ऐसी ही कमाई के कारण ये लोग कोठियों में रहते हैं और एक हम हैं कि दिन-रात परिश्रम करते हैं, परंतु फिर भी कुछ हाथ नहीं आता। ठीक ढंग से गुज़ारा भी नहीं चल पाता।

(ग) *'भैया, गुनाह का फल मिलेगा या नहीं, यह तो भगवान जाने, पर ऐसी ही कमाई से कोठियों में रहते हैं और एक हम हैं कि परिश्रम करने पर भी हाथ में कुछ नहीं आता।'*

(क) उपर्युक्त कथन किसने, किससे, कब और क्यों कहा है?

उत्तर : उपर्युक्त कथन रमज़ान ने कहा है, जो ज़िला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन का चौकीदार था। उसने ये शब्द पड़ोस में रहने वाले इंजीनियर बाबू जगत सिंह के नौकर रसीला से तब कहे, जब रसीला ने उसे अपने मालिक बाबू जगत सिंह की रिश्वत लेने की बात बताई। रमज़ान कहता है कि रिश्वत के धन से ऐशो-आराम की ज़िंदगी जी जाती है, मेहनत से कमाए धन से तो केवल दो वक्त की रोटी ही खाई जा सकती है।

(ख) वक्ता का संकेत किस 'गुनाह' की ओर है? यह 'गुनाह' किसने किया था और कैसे?

उत्तर : वक्ता का संकेत उनके मालिकों द्वारा ली जाने वाली 'रिश्वत' की ओर है। रसीला के मालिक इंजीनियर जगत सिंह रिश्वत लेकर लोगों का काम करवाते थे। एक व्यक्ति पाँच सौ की रिश्वत देकर अपना काम करवाना चाहता था, परंतु बाबू जगत सिंह केवल पाँच सौ में सौदा नहीं करना चाहते थे। वह अधिक धन की चाह रखते थे।

(ग) "ऐसी ही कमाई" द्वारा वक्ता समाज की किस बुराई पर क्या व्यंग्य कर रहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'ऐसी ही कमाई' द्वारा वक्ता रमज़ान रिश्वत की कमाई पर व्यंग्य कर रहा है। समाज के बड़े-बड़े अमीर लोग ईमानदार नहीं हैं। वे लालची हैं। जब कोई शिकार फँसता है, तो उससे रिश्वत के रूप में अच्छी-खासी रकम वसूल लेते हैं। रिश्वत की कमाई से ही ये लोग बड़ी-बड़ी कोठियों में ऐशो-आराम की ज़िंदगी जीते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

(घ) वक्ता की यह बात सुनकर श्रोता के मन में क्या विचार आए और क्यों?

उत्तर : रमज़ान की उपर्युक्त बात सुनकर रसीला के मन में आया कि उसके हाथ से सैंकड़ों रुपए निकल गए, पर कभी भी उसका धर्म नहीं बिगड़ा। एक-एक आना भी उड़ाता, तो काफी रकम जुड़ जाती। वह ऐसा इसलिए सोच रहा था कि इतनी मेहनत करने पर भी उसका व उसके परिवार का गुज़ारा बहुत मुश्किल से होता है और इधर से अमीर व रिश्वतखोर लोग आराम की ज़िंदगी जीते हैं।

(vi) *'रसीला ने तुरंत अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसने कोई बहाना नहीं बनाया।'*

(क) रसीला का मुकदमा किसकी अदालत में पेश हुआ? उनका परिचय दीजिए।

उत्तर : रसीला का मुकदमा शेख सलीमुद्दीन जिला मजिस्ट्रेट की कचहरी में पेश हुआ, जो बाबू जगत सिंह के पड़ोस में रहते थे। रिश्वत लेने के मामले में ये बाबू जगत सिंह के भी गुरु थे। ये किसी का भी काम करवाने के बदले में अच्छी-खासी रिश्वत लिया करते थे।

(ख) रसीला का क्या अपराध था? उसने उसे तुरंत स्वीकार कर लिया, इससे उसके चरित्र की किस विशेषता की ओर संकेत होता है?

उत्तर : एक दिन इंजीनियर बाबू ने रसीला से पाँच रुपए की मिठाई मँगवाई। उसने साढ़े चार रुपए की मिठाई खरीदी और अठन्नी बचाकर रमज़ान को लौटा दी। घर आकर बाबू जगत सिंह को शक हुआ कि मिठाई पाँच रुपए की नहीं बल्कि कम की है। डाँटने पर रसीला ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। रसीला बहुत ईमानदार था। उसे पता था कि उसने गलती की है और उसने माफ करने की विनती की।

(ग) रसीला क्या-क्या बहाने बनाकर अपने को बेकसूर साबित कर सकता था, पर उसने ऐसा क्यों नहीं किया?

उत्तर : रसीला ने कचहरी में अपना गुनाह कबूल कर लिया था कि उसने अठन्नी की बेईमानी की है। उसने कोई बहाना न बनाया। यदि वह चाहता तो कह सकता था कि यह साज़िश है। वह नौकरी नहीं करना चाहता था इसलिए हलवाई से मिलकर उसे फँसाया जा रहा है। रसीला सीधा आदमी था। वह जानता था कि वह एक अपराध पहले ही कर चुका था, इसलिए कचहरी में झूठ बोलकर बचने का एक और अपराध करने का साहस वह नहीं जुटा पाया क्योंकि उसे समझ आ गई थी।

(घ) रसीला को कितनी सज़ा हुई ? न्याय-व्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर : रसीला को अठन्नी की बेईमानी करने के छोटे-से अपराध के बदले छह महीने के कारावास का दंड मिला। लेखक ने न्याय-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। सज़ा देने वाले शेख सलीमुद्दीन स्वयं एक रिश्वतखोर थे, जो बड़ी-बड़ी घूस लिया करते थे। कुछ दिन पूर्व ही उन्होंने एक आदमी से एक हज़ार रुपए की रिश्वत ली थी। उन्होंने उसी रुमाल से मुँह पोंछा, जिसमें उन्होंने रिश्वत के रुपए लिए थे।

(vii) *'फ़ैसला सुनकर रमज़ान की आँखों में खून उतर आया।'*

(क) रमज़ान कौन था? उसका परिचय दीजिए।

उत्तर : रमज़ान जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के यहाँ चौकीदार था। वह बहुत दयालु स्वभाव का था। रसीला को मुसीबत में घिरा देखकर वह उसकी आर्थिक सहायता करता है। रिश्वत लेकर कोठियों में मौज करने वालों के प्रति उसके मन में घृणा की भावना है और रसीला जैसे सीधे-सादे व्यक्ति को अठन्नी की हेरा-फेरी करने के कारण छह महीने का कारावास हो जाने पर वह उसके प्रति सहानुभूति से भर जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

(ख) फ़ैसला किसने सुनाया था? उसकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : फैसला जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन ने सुनाया था। वे भी रिश्वतखोर थे। रिश्वत लेने के मामले में तो वे बाबू जगत सिंह के भी गुरु थे। वे रिश्वत के रूप में अच्छी-खासी रकम वसूला करते थे। न्याय करने के मामले में भी वे अपने विवेक का प्रयोग नहीं करते थे। रसीला द्वारा अपना गुनाह स्वीकार कर लिया जाने के बावजूद, उन्होंने रसीला को छह महीने की कड़ी सजा सुना दी थी।

(ग) फ़ैसला सुनकर रमज़ान क्या सोचने लगा?

उत्तर : रसीला को छह महीने का कारावास हो जाने की खबर सुनकर रमज़ान की आँखों में खून उतर आया था। उसका हृदय आक्रोश से भर गया। उसका हृदय रिश्वत लेकर कोठियों में मौज करने वालों के प्रति घृणा तथा रसीला जैसे सीधे-सादे व्यक्ति को अठन्नी की हेरा-फेरी करने के कारण छह महीने का कारावास हो जाने पर उसके प्रति सहानुभूति से भर गया।

(घ) 'बात अठन्नी की' कहानी द्वारा लेखक ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर : इस कहानी में लेखक ने समाज में व्याप्त रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार जैसी बुराई को प्रकट करने का प्रयास किया है। समाज के उच्च तथा प्रतिष्ठित पदों पर आसीन लोग रिश्वत लेकर भी सम्मानित जीवन व्यतीत करते हैं जबकि एक निर्धन व्यक्ति केवल अठन्नी की हेरा-फेरी करने के जुर्म में छह महीने का कारावास भोगने पर मजबूर हो गया। कहानी में बाबू जगत सिंह की हृदयहीनता का भी पर्दाफाश किया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

पद्य भाग

1. साखी

साखियों पर आधारित प्रश्न

(i) *गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागू पायँ।*
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोबिंद दियौ बताय।।

(क) संत कबीर ने गुरु और ईश्वर की तुलना किस प्रकार की है तथा इस दोहे के माध्यम से क्या सीख दी है?

उत्तर : संत कबीर के सामने गुरु और गोबिंद दोनों खड़े हैं। कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा है। उन्होंने इस दोहे के माध्यम से यह सीख दी है कि गुरु की कृपा से ही हम भगवान तक पहुँचते हैं, इसलिए गुरु का स्थान ईश्वर से ऊँचा है।

(ख) 'गुरु' और 'भगवान' को अपने सामने पाकर कबीर के सामने कौन-सी समस्या उत्पन्न हुई? कबीर ने उसका हल किस प्रकार निकाला और क्यों?

उत्तर : संत कबीर के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि गुरु और ईश्वर में से वह सबसे पहले किसके चरण-स्पर्श करे। इसका हल उन्होंने स्वयं ही खोजा कि गुरु ने ही मुझे ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताया है, इसलिए मुझे गुरु के चरणों में ही अपना शीश झुकाना चाहिए।

(ग) 'बलिहारी गुरु आपनो' कबीर ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर : कबीर जी कहते हैं कि मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने उसे ईश्वर प्राप्ति का मार्ग सुझाया। यदि गुरु उसका मार्गदर्शन न करते, तो वह ईश्वर तक न पहुँच पाता।

(घ) 'गुरु गोबिंद दोऊ खड़े'—शीर्षक साखी के आधार पर गुरु का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

उत्तर : गुरु ज्ञान का भंडार है, जो अपने शिष्य को उत्तम ज्ञान देकर उसे महान बनाता है तथा उसकी प्रत्येक कठिनाई को दूर करने का प्रयास करता है। गुरु ही उसे अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाता है तथा ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भी सुझाता है।

(ii) *जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।*
प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाहि।।

(क) 'जब मैं था तब हरि नहीं'— दोहे में 'मैं' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया गया है? 'जब मैं था तब हरि नहीं' —पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर : दोहे में 'मैं' शब्द का प्रयोग अहंकार की भावना के अर्थ में किया गया है। कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मनुष्य में अहंकार की भावना होती है, तब तक उसे ईश्वर का साक्षात्कार नहीं होता। ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा मनुष्य के अहंकार की होती है। अहंकार-शून्य होकर ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

(ख) कबीर के अनुसार प्रेम की गली की क्या विशेषता है? प्रेम की गली में कौन-सी दो बातें एक-साथ नहीं रह सकतीं और क्यों?

उत्तर : प्रेम की गली बहुत तंग होती है। जिस प्रकार किसी तंग गली में दो व्यक्तियों को स्थान नहीं दिया जा सकता, ठीक उसी प्रकार प्रेम की गली में 'अहंकार' और 'ईश्वर' इन दोनों को स्थान नहीं मिल सकता।

Scanned with OKEN Scanner

(ग) उपर्युक्त साखी द्वारा कबीर क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तर : कबीर की साखी में स्पष्ट किया गया है कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए सर्वाधिक आवश्यकता है—अहंकार के त्याग की। अहंकारी व्यक्ति ईश्वर को नहीं पा सकता। अहंकार शून्य व्यक्ति सरल हृदय हो जाता है तथा ऐसा व्यक्ति ही भगवान को पा सकता है।

(घ) 'प्रेम गली अति साँकरी'—पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कबीर कहते हैं कि प्रेम की गली बहुत तंग होती है। उसमें अहंकार और भगवान दोनों नहीं रह सकते। भाव यह है कि अहंकारी व्यक्ति कभी भगवान को नहीं पा सकता।

(iii) ***काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।***

ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

(क) कबीरदास ने मस्जिद की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

उत्तर : कबीरदास जी मुसलमानों के खुदा को याद करने या पुकारने के ढंग पर करारा व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि तुमने कँकड़ और पत्थर जोड़-जोड़ कर मस्जिद का निर्माण कर लिया है, जिस पर चढ़कर मुल्ला बाँग देता है।

(ख) उपर्युक्त पंक्तियों में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : समाज-सुधारक संत कबीर ने इस साखी में मुस्लिम धर्मानुयायियों द्वारा अजान देकर अल्लाह का नाम लेने पर व्यंग्य किया है। वे मस्जिद पर चढ़कर ज़ोर-ज़ोर से 'अल्लाह' का नाम लेकर अजान देते हैं। कबीर पूछते हैं कि क्या उनका खुदा बहरा है, जिसके कारण इतने ज़ोर-ज़ोर से उसका नाम पुकारा जा रहा है।

(ग) उपर्युक्त दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कबीर बाह्य आडंबरों के विरोधी थे।

उत्तर : कबीरदास जी ने इस दोहे में प्रचलित रूढ़ियों और आडंबरों पर गहरी चोट की है। उन्होंने मुसलमानों को इस बात के लिए फटकारा है कि वे मस्जिद पर चढ़कर बाँग देकर खुदा को क्यों पुकार रहे हैं ? उनका खुदा बहरा नहीं है। शांत स्वर में भी उसे स्मरण किया जा सकता है।

(घ) उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा कबीर क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तर : कबीरदास जी ने इन पंक्तियों में प्रचलित रूढ़ियों और आडंबरों पर करारी चोट करते हुए मुसलमानों को इस बात के लिए फटकारा है कि वे मस्जिद पर चढ़कर बाँग देकर खुदा को क्यों पुकार रहे हैं ? उनका खुदा बहरा नहीं है, जो केवल ज़ोर-ज़ोर से बोलने पर ही पुकार सुनता है। इसलिए मस्जिद पर चढ़कर ज़ोर-ज़ोर से बाँग देना व्यर्थ है, क्योंकि ईश्वर को सब कुछ सुनाई देता है, इसलिए उसे शांत स्वर में भी पुकारा जा सकता है।

(iv) ***पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।***

ताने ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।

(क) कबीर हिंदुओं की मूर्ति पूजा पर किस प्रकार व्यंग्य कर रहे हैं ?

उत्तर : उपर्युक्त साखी में संत कबीरदास हिंदुओं की मूर्ति पूजा पर करारा व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि यदि पत्थर पूजने से भगवान मिल जाएँ, तो मैं किसी छोटे-मोटे पत्थर की नहीं, बल्कि पूरे पहाड़ की पूजा कर लूँगा।

Scanned with OKEN Scanner

(ख) 'ताते ये चाकी भली'—पंक्ति द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर : कबीरदास जी मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे। वे इसे एक आडंबर बताते थे। उनके अनुसार पत्थर की बनी मूर्ति की पूजा से कुछ प्राप्त नहीं होने वाला है। पत्थर की उस मूर्ति से तो 'चक्की' कहीं बेहतर है' क्योंकि इसके प्रयोग से अनाज का आटा तो प्राप्त किया जा सकता है, जिसे सभी प्रयोग करते हैं।

(ग) 'कबीर एक समाज सुधारक थे'—उपर्युक्त पंक्तियों के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए तथा बताइए कि इन पंक्तियों द्वारा वे क्या संदेश दे रहे हैं ?

उत्तर : कबीरदास जी ने उपर्युक्त साखी में मूर्ति पूजा को एक ढोंग एवं ढकोसला बताते हुए उसकी निंदा की है। वे कहते हैं कि केवल पत्थर पूजन से ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं है। यदि पत्थर की बनी मूर्ति की पूजा करने से भगवान की प्राप्ति हो जाती, तो मैं पत्थर की बनी छोटी सी मूर्ति के स्थान पर पत्थर के बने पहाड़ की पूजा करने को तैयार हूँ।

(घ) कबीर की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर : कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। वे साधु-संन्यासियों की संगति में रहते थे, जिसके कारण उनकी भाषा में अनेक भाषाओं तथा बोलियों के शब्द पाए जाते हैं। उसमें हिंदी के अलावा ब्रज, अवधी, उर्दू, फ़ारसी, पंजाबी आदि के शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है, इसलिए कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' या 'पंचमेल खिचड़ी' कहा जाता है।

(v) *सब धरती कागद करौं, लेखनि सब बनराय।*

सात समंद की मसि करौं, गुरु गुन लिखा न जाय।।

(क) 'भगवान के गुण अनंत हैं'—कबीर ने यह बात किस प्रकार स्पष्ट की है?

उत्तर : कबीरदास जी कहते हैं कि भगवान के अनंत गुणों का बखान नहीं किया जा सकता, उन्हें संपूर्ण रूप से लिखकर भी प्रकट नहीं किया जा सकता। ईश्वर के गुणों का उल्लेख करना असंभव है।

(ख) कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : कबीर निर्गुणवादी संत कवि थे। वे हिंदू तथा मुस्लिम धर्म में व्याप्त अनेक प्रकार के ढोंग-ढकोसलों तथा आडंबरों के कट्टर विरोधी थे। उनके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति शुद्ध आचरण एवं ज्ञान से होती है, इसलिए उन्होंने अपनी साखियों में हिंदुओं और मुसलमानों को इन धर्मों में व्याप्त रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों के लिए फटकारा है।

(ग) कबीर ने भगवान के गुणों का बखान करने के लिए किन-किन वस्तुओं की कल्पना की है? वे इस कार्य के लिए पर्याप्त क्यों नहीं हैं ?

उत्तर : कबीरदास जी कहते हैं कि भगवान के अनंत गुणों का बखान नहीं किया जा सकता। ईश्वर के गुणों का वर्णन करने के लिए यदि सारी धरती का प्रयोग कागज़ के रूप में कर लिया जाए, सभी वनों की लकड़ी को कलम के रूप में प्रयोग किया जाए तथा सातों समुद्रों के पानी को स्याही बना लिया जाए, तो भी ईश्वर के गुण नहीं लिखे जा सकते क्योंकि भगवान के अनंत गुणों का उल्लेख करना असंभव है। उन्हें लेखनी के बंधन में बाँधना असंभव है।

(घ) 'लेखनि सब बनराय' के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कबीरदास जी ईश्वर के अनंत गुणों का उल्लेख करने के संबंध में कहते हैं कि ईश्वर के गुणों का बखान करना असंभव है। यदि उनके गुणों का वर्णन करने के लिए हम जंगलों के सभी पेड़ों को कलमें बना लें, तो भी ईश्वर के गुण नहीं लिखे जा सकते।

Scanned with OKEN Scanner